जब बच्चों ने मापी दोस्ती!

नीतू सिंह

शिक्षा के सन्दर्भ में बनाए गए आयोगों, नीतियों और पाठ्यचर्या दस्तावेज़ों में बच्चों के लिए किताबें, पुस्तकालय और उसके सार्थक इस्तेमाल की वकालत की गई है। लेकिन घूम फिर कर बात बच्चों के लिए अच्छी पुस्तकों की उपलब्धता और स्कूल में पुस्तकालय के जीवन्त संचालन से जुड़ी व्यवहारिक समस्या पर आकर टिक जाती है। बच्चों के साथ पुस्तकों का योजनाबद्ध और जीवन्त इस्तेमाल शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों को तो पूरा करता ही है, बच्चों को साहित्य का एक सक्रिय पाठक भी बनाता है। नीतू सिंह ने अपने आलेख में पुस्तकालय की विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के साथ किए गए काम का अनुभव साझा किया है। सं.

एक सक्रिय और जीवन्त पुस्तकालय किसी समाज में सीखने-सिखाने के माहौल को मज़बूती प्रदान करता है। यह बच्चों में सृजनशीलता विकसित करने के लिए एक जगह भी मुहैया कराता है।

एनसीएफ़ 2005 में पुस्तकालयों को सीखने की एक महत्त्वपूर्ण जगह के रूप में सन्दर्भित किया गया है। इसमें यह प्रस्तावित है कि पुस्तकालय विद्यालय का एक अनिवार्य घटक होगा, जो सीखने के संसाधन प्रदान करने के साथ-साथ सक्रिय रूप से पढ़ने के विचार को मज़बूत भी करेगा। विभिन्न शिक्षा नीतियाँ बच्चों के विकास में जीवन्त पुस्तकालय की ज़रूरत को लगातार रेखांकित करती रही हैं। इसके बावजूद विगत कई दशकों से विद्यालयों के छात्र, हम जैसे वयस्क, शिक्षक आदि पुस्तकालय रहित जीवन जीते रहे हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सभी स्तरों पर छात्रों के लिए आनन्ददायक और प्रेरणादायक पुस्तकें विकसित करने की ज़रूरत पर बल दिया गया है। साथ ही यह भी कहा गया है कि सभी तरह की पुस्तकों का स्थानीय और भारतीय भाषाओं में उच्च-गुणवत्ता वाला अनुवाद किया जाएगा। आवश्यकतानुसार तकनीकी सहायता के माध्यम से इनको स्कूल और स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालयों में बड़े पैमाने पर उपलब्ध कराया जाएगा।

पुस्तकों की उपलब्धता कुछ हद तक पढ़ने-पढ़ाने के प्रयासों में सहायक ज़रूर होगी, लेकिन बहुत सारे प्रश्न फिर भी अनुत्तरित रहेंगे। मसलन, उपलब्ध पुस्तकों को पाठक कैसे मिलेंगे? यह अकसर देखने को मिलता है कि कई विद्यालयों में पुस्तकों की उपलब्धता तो रहती है, लेकिन वहाँ पाठक नहीं होते। इस वजह से पुस्तकें अलमारियों में धूल खाती दिखती हैं। किसी विद्यालय के पुस्तकालय को जीवन्त बनाने के लिए अच्छी पुस्तकों की उपलब्धता के साथ-साथ बच्चों को इन पुस्तकों के साथ जोड़ने के प्रयासों पर बल दिए जाने की ज़रूरत है। यह जुड़ाव पुस्तकालय में पुस्तक-आधारित विभिन्न गतिविधियों के नियमित संचालन और संवाद के माध्यम से ही सम्भव हो पाएगा। इसमें कहानी सुनाना, कहानियों के चित्रों पर बातचीत, रंगमंच, आर्ट-क्राफ़्ट आदि गतिविधियाँ मददगार साबित हो सकती हैं।

किताबों से जोड़ने वाली गतिविधि : रीड अलाउड

बच्चों को किताबों से जोड़ने की बात आते ही हमारे मन में कई विचार आने लगते हैं। जैसे सुसज्जित लाइब्रेरी, किताबों की उपलब्धता, उन्हें रखने का स्थान, बैठक व्यवस्था, गतिविधि की जगह आदि। यक़ीन मानिए, जब हम इतना कुछ एक साथ सोचने लगते हैं तो कार्य शुरू करने में विलम्ब हो जाता है। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा था। फिर मैंने तय किया कि अब और विलम्ब नहीं! मेरे पास किताबें थीं, एक स्कूल के बच्चे थे। मेरे विचार से यह शुरुआत करने के लिए काफ़ी था।

पहली बार जब मैं इस सिलसिले में विद्यालय की तीसरी कक्षा के बच्चों के साथ बातचीत कर रही थी, तो एक पल को लगा कि शायद मैं अपने उद्‌देश्य में सफल न हो पाऊँ! वजह स्पष्ट थी। उनसे बातचीत में यह पता चला कि स्कूल में लाइब्रेरी होने के बावजूद वे कभी लाइब्रेरी में नहीं गए थे। स्कूल की लाइब्रेरी अकसर बन्द रहती थी। प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे तो लाइब्रेरी में बिलकुल भी नहीं जा सकते थे। उस स्कूल के शिक्षकों को इस बात का डर था कि बच्चे लाइब्रेरी में रखी चीज़ों को नुक़सान पहुँचा सकते हैं। स्कूल के बँधे-बँधाए पैटर्न में बच्चों को किताबों से जोड़ने का काम मुझे सचमुच ही मुश्किल लग रहा था। फिर भी किसी तरह शुरुआत तो करनी ही थी!

बच्चों के साथ बातचीत के क्रम को आगे बढ़ाने के लिए मैंने तय किया कि उनसे कहानियों पर बात की जाए। कहानियों का ज़िक्र आते ही बच्चों ने बताया कि स्कूल में न तो कहानी सुनाई जाती है और न पढ़ने को कहानी की किताबें ही दी जाती हैं। कुछ बच्चों का कहना था कि कभी-कभी घर में उनकी माँ कहानियाँ सुना देती हैं। जब मैंने एक बच्चे से कोई सुनी हुई कहानी सुनाने को कहा तो उसने 'मछली जल की रानी है' कविता सुनाई। इस कक्षा में कहानी और कविता को लेकर न तो कभी बात हुई होगी, न ही कोई काम। ऐसा मैंने अनुमान लगाया। मैंने तय किया कि इन बच्चों के साथ मैं लगातार रीड अलाउड गतिविधि को लेकर काम करूँगी जिसकी मदद से 'कहानी सुनाने' के साथ-साथ 'कहानियों पर चर्चा' भी हो पाएगी। कहानी चर्चा से बच्चों के साथ संवाद स्थापित करना सम्भव हो पाएगा जिसकी यहाँ ज़रूरत महसूस हो रही थी। मैंने रीड अलाउड करने के बारे में विचार तो ज़रूर किया, लेकिन मुझे नहीं पता था कि यह योजना किस तरह से काम करेगी। कुछ हफ़्तों तक मैं लगातार कहानियाँ सुनाती रही और उनपर चर्चा करती रही।

नियमित रूप से इस गतिविधि को कराने से कई तरह के अनुभवों से दो-चार होना पड़ रहा था जिन्हें मैं अपनी डायरी में दर्ज करती जा रही थी। उन्हीं में से कुछ अनुभव मैं यहाँ साझा कर रही हूँ।

अनुभव 1 : कहानी 'नाव चली'

आज स्कूल में तीसरी कक्षा के बच्चों को 'नाव चली' कहानी सुनाने की मेरी योजना थी। उसकी पूर्व तैयारी भी मैंने कर ली थी। क्या करना है? क्या सुनाना है? या क्या पूछना है? ये सोचते हुए मैं लाइब्रेरी पहुँची। बच्चे वहाँ पहले से मौजूद थे। उन्होंने बड़े ही उत्साह के साथ मेरा स्वागत किया और पूछा–

"आज कौन-सी कहानी सुनाएँगी आप?"

शायद इतनी जल्दी प्रत्युत्तर के लिए मैं तैयार नहीं थी। मैं महज़ मुस्कुराकर रह गई। मैंने उन्हें बैठने को कहा। फिर मैंने उनको एक बालगीत सुनाया जो कहानी के विषय से मिलता जुलता था–

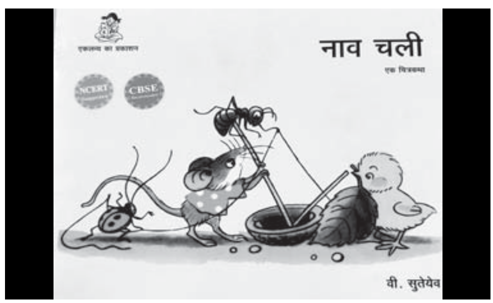

नाव चली, नाव चली
नाव चली रे...
हम सब को लेकर गाँव चली रे...

इसे सभी बच्चों ने काफ़ी उत्साह से मिलकर गाया। उन्हें बहुत मज़ा आ रहा था। उन्होंने एक बार और गाने की ज़िद भी की।

मैंने कहानी पढ़ना शुरू करने से पहले 'नाव' विषय पर थोड़ी चर्चा करने का सोचा। कहानी सुनाने से पहले इससे माहौल बनाने में मदद मिलती है। वैसे बालगीत ने भी ठीक-ठाक माहौल तैयार कर ही दिया था। नाव पर चर्चा के लिहाज़ से मैंने कुछ सवाल बच्चों के सामने रखे। जैसे–

"क्या आपने कभी नाव देखी है?"

"क्या कभी नाव पर बैठने को मिला है?"

सवाल सपाट से थे। पर उनके उत्तर रोचक मिले। साथ ही जवाब देने का अन्दाज़ मज़ेदार।

ऋषि ने कहा, "हाँ देखा है, लकड़ी का होता है। मेरे गाँव में है। हम इस पार से उस पार जाते हैं।" इतने में हीर भी बोल पड़ी, "हाँ मैंने भी देखा है, चटाई की नाव गाँव में, और बैठी भी हूँ। बहुत मज़ा आया था।" बात आगे बढ़ी तो बच्चों के अनुभवों की बरसात शुरू हो गई। कल्पनाओं की उड़ान भी जारी थी। विक्की ने बताया, "हाँ हाँ, मैंने भी देखा है। मेरे गाँव में भी है और उस नाव में तो एक साथ बीस हज़ार लोग बैठते हैं (मैं यहाँ स्पष्ट कर दूँ उसने बीस हज़ार ही कहा था)। थोड़ी देर के बाद गीता कुछ याद करते हुए बोली, "मेरे गाँव में भी थी। पर अब नहीं है, क्योंकि तालाब सूख गया।"

फिर मैंने एक और सवाल पूछा, "क्या तुम लोगों ने कभी नाव बनाई है, यदि हाँ, तो कैसे?" एक साथ कई बच्चों ने अपने हाथ खड़े कर दिए। ऐसा लगा कि पूरी क्लास ही नाव बनाना जानती होगी। मेरे सवाल के कई जवाब थे। जैसे– काग़ज़ से, पत्ते से, पेड़ की टहनियों से और भी कुछ-कुछ...। कुछ देर तक यह बातचीत चलती रही। ऐसा लग रहा था हर बच्चा अपने हुनर को बताकर दर्ज कराना चाहता हो। इसी बीच मैंने किताब को अपने हाथ में लिया। उसके कवर को सामने रखते हुए अपनी हथेली से किताब के शीर्षक को ढँक लिया और बच्चों से पूछा कि किताब का शीर्षक क्या हो सकता है? बच्चों ने मुखपृष्ठ की तस्वीर को देखकर कई तरह के अनुमान लगाए। मसलन, चूजे की कहानी, तितली की कहानी, नाव की कहानी, जंगल की कहानी आदि। फिर मैंने शीर्षक से अपना हाथ हटाकर कहानी का नाम बताया और कहानी पढ़ना शुरू किया। कहानी पढ़ने के दौरान बच्चों से एक-दो सवाल भी किए। जैसे– क्या सारे जानवरों ने मिलकर नाव बना ली होगी? बच्चों ने तुरन्त कहा, "हाँ, बना ली होगी।" एक-दो बच्चों ने कहा, "नहीं बना पाए होंगे! क्योंकि इतने छोटे जानवर इतनी बड़ी नाव कैसे बना सकते हैं?" ख़ैर, बीच में ज़्यादा बातचीत न करते हुए मैंने कहानी पूरी की। कहानी पूरी होते ही बच्चों ने ज़ोरदार तालियाँ बजाईं। शायद उन्हें कहानी अच्छी लगी थी। ऐसा इसलिए कह रही हूँ क्योंकि इन बच्चों के साथ कहानी सुनाने के अलग-अलग अनुभव रहे। मसलन, जब उन्हें कहानी में ज़्यादा मज़ा नहीं आया तो उन्होंने ताली बजाई ही नहीं, या बजाई भी तो बड़ी कंजूसी से।

कहानी समाप्त होने पर मैंने उनसे कुछ और सवाल भी किए। जैसे– अगर जानवर मिलकर काम नहीं करते तो नाव बना पाते? क्या आपने कभी कोई काम समूह में किया है? उनके जवाब अलग-अलग थे। जैसे– कुछ ने कहा, "नहीं बना पाते क्योंकि नाव बनाने में मेहनत लगती है, अकेले से नहीं होगा।" एक ने कहा, "हमने एक बार मिलकर बण्डल बनाया था स्कूल में। बहुत मज़ा आया था।" दूसरे ने कहा, "नाव बनाना मुश्किल काम नहीं है, अकेले बना सकते हैं।"

थोड़ी देर की चर्चा के बाद मैंने नाव बनाने की एक गतिविधि कराई। दो-दो बच्चों के जोड़ों ने मिलकर काग़ज़ की एक नाव बनाई। नाव बनाते वक़्त वे आपस में बात करते, एक

दूसरे को सुझाव देते कि नहीं, ऐसे बनेगा। कोई कहता, नहीं ऐसे। काग़ज़ को खोलते, दुबारा बनाते। हर बच्चा अपनी नाव बनाने में इस तरह डूबा था, जैसे उन्हें उसकी सवारी करनी हो। जब सबकी नाव तैयार हो गई तो मैंने बच्चों के साथ मिलकर उन सभी नावों को एक रस्सी में पिरो दिया और लाइब्रेरी के नोटिस बोर्ड पर लगा दिया। अपनी-अपनी नावों को नोटिस बोर्ड पर टँगा देखकर बच्चे इतने ख़ुश हुए कि उस दृश्य का वर्णन यहाँ शब्दों में करना शायद सम्भव नहीं हो पाए।

अनुभव 2 : छुटकी उल्ली

कुछ दिन बाद उसी कक्षा के बच्चों के साथ *छुटकी उल्ली* किताब पर रीड अलाउड करने की योजना बनी। हमेशा की तरह मैं अपनी तैयारी के साथ कक्षा में पहुँची। बच्चों ने चिल्लाकर मेरा स्वागत किया था। अब उन्हें कहानी सुनना अच्छा लगने लगा था। वे इस कक्षा का इन्तज़ार करने लगे थे। शुरुआत में बच्चों ने कविता कराने की ज़िद की। मैंने उन्हें 'सोन चिरईया' वाली कविता सुनाई। बच्चे भी मेरे साथ-साथ गा रहे थे। कहानी सुनाने के पूर्व मैंने उनसे कुछ सवालों पर चर्चा भी की। मैंने पूछा कि जब आपके मन में कोई सवाल आता है, आप किससे पूछते हैं?

बच्चों ने उत्तर में घर के सदस्यों और अपने शिक्षक के नाम बताए। फिर मैंने पूछा कि क्या आपको अपने सारे सवालों के जवाब मिल जाते हैं? उत्तर में कुछ बच्चों ने 'हाँ' और कुछ ने 'नहीं' कहा। मैंने फिर पूछा कि जब उत्तर नहीं मिलता है, तब क्या करते हैं? बच्चों ने कहा कि सोचते रहते हैं। किसी ने कहा, दोस्त से पूछते हैं?... थोड़ी चर्चा के बाद एक और सवाल उनके सामने रखा कि जानवर क्या-क्या करते हैं? क्या-क्या आपने देखा है? यह पूछते ही जवाबों की झड़ी लग गई– खेलते हैं, सोते हैं, खाते हैं, उदास होते हैं, आदि। फिर मैंने पूछा कि जानवर दिन में क्या और रात में क्या करते हैं? फिर से अनगिनत जवाब थे। दो-तीन बच्चों ने कहा कि चमगादड़ और उल्लू रात को नहीं सोते।

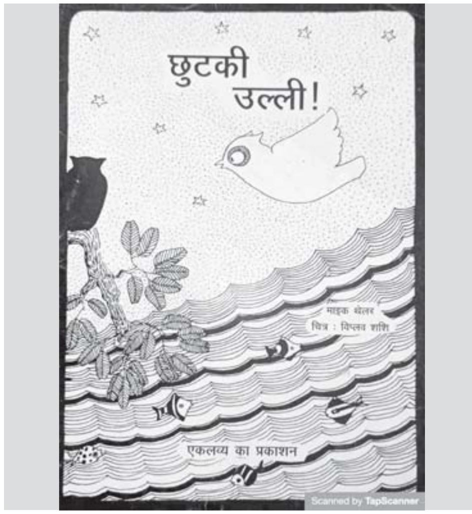

इस तरह धीरे-धीरे हम कहानी की तरफ़ बढ़ रहे थे।

जब बच्चों की कल्पनाएँ उड़ान भर रही थीं, तब मैंने कहानी के कवर पेज को दिखाते हुए उनसे अनुमान लगाने के लिए कहा। साथ ही उनसे पूछा कि यह कहानी किसकी होगी, क्या हुआ होगा कहानी में? कवर पेज देखकर बच्चे समझ गए कि कहानी उल्लू की है। किसी ने 'दो उल्लू की कहानी' कहा तो किसी ने 'छोटे उल्लू और बड़े उल्लू की कहानी', आदि। मैंने कहानी का नाम बताते हुए पढ़ना शुरू किया। बीच-बीच में दो-एक सवाल भी किए। जैसे– छुटकी उल्ली अगला सवाल क्या करेगी? बच्चों ने कई जवाब दिए। कुछ जवाब ऐसे थे जिन्हें सुनकर लगा कि उनके मन में जो सवाल हैं, वही सवाल बता रहे हों। यह कहते हुए कि छुटकी उल्ली अब यह पूछेगी।

मेरा अगला सवाल था कि क्या उसे अपने सवालों का जवाब मिलेगा? ज़्यादातर बच्चों ने कहा कि मिल जाएगा। फिर हम आगे बढ़े और कहानी पूरी की। कहानी समाप्त होते ही बच्चों ने हमेशा की तरह तालियाँ बजाईं।

रीड अलाउड के अन्त में मैंने कहानी को लेकर एक गतिविधि कराई और थोड़ी चर्चा की। चर्चा में मैंने पूछा कि छुटकी उल्ली की माँ हमेशा उसे ख़ुद से करके देखने को क्यों कहती

थी? बच्चों के जवाब कुछ इस तरह थे–

"ताकि वो ख़ुद ढूँढ़े जवाब",

"उसकी माँ तंग आ गई थी उसके सवालों से",

"उसकी माँ इसलिए ऐसा करती थी ताकि छुटकी उल्ली थक जाए और सो जाए",

"उसके सवाल मुश्किल थे इसलिए"।

गतिविधि कराने के लिए मैंने बच्चों को चार समूहों में बाँट दिया। हर समूह को एक कार्य दिया। पहले समूह को अपने हाथों से कक्षा की बेंच को मापने का, दूसरे को ब्लैकबोर्ड मापने का, तीसरे को कक्षा और चौथे समूह को दोस्ती मापने का काम दिया। कार्य बताते ही बच्चे अपने-अपने समूह के कार्यों में लग गए। काम को पहले करने और अव्वल आने की होड़ थी। बच्चों को मज़ा आ रहा था। सभी समूहों ने काम को प्रस्तुत किया और माप बताई। दुविधा तो चौथे समूह की थी कि दोस्ती को कैसे मापेंगे और कैसे बताएँगे? जब उन्होंने सारे समूहों को बताया कि उन्होंने दोस्ती मापी है, सब हँस पड़े और पूछा, कैसे मापी? दोनों बच्चे, जो प्रस्तुति दे रहे थे, गले लग गए और कहा, ऐसे।

इस कहानी का चुनाव करने से पहले मैं यह सोचकर थोड़ा डर रही थी कि पता नहीं बच्चों को कहानी अच्छी लगेगी या नहीं। क्योंकि इस किताब के चित्र ब्लैक एंड व्हाइट हैं। पर ऐसा नहीं हुआ और बच्चों ने ख़ूब रुचि दिखाई। चित्र रंगीन हों या ब्लैक एंड व्हाइट, कहानी के प्रभाव पर अधिक फ़र्क़ नहीं पड़ता अगर कहानी वाक़ई अच्छी हो और उसे प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया हो।

अनुभव समेटते हुए : कहानियाँ, बच्चे और पुस्तकालय

कोरोना की वजह से स्कूल बन्द होने से गतिविधि भी रुक गई। मुझे याद है जब मैं पहली बार इन बच्चों से मिली थी, ऐसा लगा था कि शायद इनकी दिलचस्पी कभी किताबों में न जगा पाऊँ। इन बच्चों का कहानियों और किताबों से दूर-दूर तक कोई वास्ता न था। पर थोड़े ही प्रयासों से कहानियों और किताबों ने अपना जादू कर ही दिया। स्कूल बन्द होने के पूर्व स्थिति ऐसी थी कि बच्चे लाइब्रेरी से जाना ही नहीं चाहते थे। मनोविश्लेषक ब्रूनो बेतलहाइम के हवाले से कृष्ण कुमार कहते हैं कि छोटे बच्चों के भावनात्मक विकास की कई गहरी ज़रूरतें नियमित रूप से कहानी सुनकर पूरी होती हैं। इसलिए कहानी सुनाने की गतिविधि पुस्तकालय में नियमित रूप से कराए जाने से बच्चों पर इसका सकारात्मक प्रभाव दिखता है। पुस्तकालय बच्चों के साथ एक अलग तरीक़े से संवाद करता है।

सन्दर्भ

1. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005)*, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
2. कृष्ण कुमार (1996), *बच्चे की भाषा और अध्यापक*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
3. भारत सरकार (2020), *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी*, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. *नाव चली*, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल।
5. *छुटकी उल्ली*, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल।

नीतू सिंह टाटा ट्रस्ट के पराग कार्यक्रम में लाइब्रेरी एडुकेटर्स कोर्स की संयोजक और फ़ैकल्टी के रूप में कार्यरत हैं। पिछले 10 वर्षों से शिक्षा-शास्त्र और भाषा के अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ वे बाल-साहित्य, शिक्षक-शिक्षा और बच्चों के पुस्तकालय के क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं।

सम्पर्क : nitu.education@gmail.com